अनोखी चूत चुदाई के बाद-4

“लड़की जब पूरी गर्म हो जाए, अपने पे आ जाए तो फिर वो चूत में लंड लेने के लिए कुछ भी कर सकती है। 'उफ्फ पापा जी, मेरी चूत में पेल दो अपना लंड मुझे जल्दी से !' बहूरानी बेसब्री से बोली। ...”

Story By: Sukant Sharma (sukant7up)
Posted: Monday, January 9th, 2017
Categories: रिश्तों में चुदाई
Online version: अनोखी चूत चुदाई के बाद-4

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

अनोखी चूत चुदाई के बाद-4

‘योनि नहीं, कोई दूसरा नाम बताओ इसका, तभी घुसाऊँगा लंड !’ मैंने उसे और तंग किया फिर उसके भगांकुर को होंठों में लेकर चुभलाने लगा।
‘उफ्फ पापा जी, आप और कितना बेशर्म बनाओगे मुझे आज… लो मेरी चूत में पेल दो अपना लंड और चोदो मुझे जल्दी से !’ बहूरानी अपनी चूत मेरे मुंह पर मारती हुई बेसब्री से बोली।
चूत के रस से मेरी नाक, मुंह भीग गया।

बहूरानी अब अच्छे से अपने पे आ गई थी, लड़की जब पूरी गर्म हो जाए, अपने पे आ जाए तो फिर वो चूत में लंड लेने के लिए कुछ भी कर सकती है।

‘अदिति बेटा, थोड़ा सब्र और कर, बस एक बार लंड दो चूस दे मेरा अच्छे से, फिर तेरी मस्त चुदाई करता हूँ।’ मैंने उसकी चूची मरोड़ते हुए कहा।
उसके न कहने का तो प्रश्न ही नहीं था अब… मैं उठ कर पालथी मार के बैठ गया, मेरा लंड अब मेरी गोद में 90 डिग्री पर खड़ा था।बहू रानी ने झट से लंड की चमड़ी चार पांच ऊपर नीचे की फिर झुक कर लंड को मुंह में भर लिया और कल ही की तरह चूम चूम कर चाट चाट कर चूसने लगी।

बहूरानी के मेहंदी रचे गोरे गोरे हाथों में मेरा काला कलूटा लंड कितना मस्त दिख रहा था, देखने में ही मज़ा आ गया।

बहूरानी कभी मेरी और देख देख के सुपारा चाटती कभी मेरे टट्टे सहलाती। मेरे ऊपर झुकने से उसकी नंगी गोरी पीठ मेरे सामने थी जिस पर उसके रेशमी काले काले बाल बिखरे हुए थे।

मैंने उसकी पीठ को झुक कर चूम लिया और हाथ नीचे ले जा कर उसके कूल्हों पर थपकी दे दे कर सहलाने लगा।
इस तरह मेरे झुकने से मेरा लंड उसके गले तक जा पहुंचा और वो गूं गूं करने लगी जैसे उसकी सांस अटक रही हो।

मैं फिर सीधा बैठ गया तो बहूरानी ने लंड मुंह से बाहर निकाल लिया लेकिन उसकी लार के तार अभी भी मेरे लंड से जुड़े हुए थे और उसका मुखरस उसके होंठों के किनारों से बह रहा था।
उसने फिरसे लंड मुंह में ले लिया और मैंने उसका सर अपने लंड पर दबा दिया और नीचे से उसका मुंह चोदने लगा। ऐसे एक दो मिनट ही चोद पाया मैं उसका मुंह कि वो हट गई।

'बस, पापाजी. सांस फूल गई मेरी. अब नहीं चूसूंगी ; इसे अब जल्दी से घुसा दो मेरी चूत में !' वो तड़प कर बोली।
मैंने भी वक्त की नजाकत को समझते हुए उसकी गांड के नीचे एक मोटा सा तकिया लगा दिया जिससे उसकी चूत अच्छे से उभर गई।

बहू रानी की चूत में पुनः लंड

तकिया लगाने से बहूरानी की कमर का नीचे का हिस्सा एक दर्शनीय रूप ले चुका था, अदिति ने अपनी घुटने ऊपर मोड़ लिए थे जिससे उसकी जांघे वी शेप में हो गईं और नीचे उसकी चूत की दरार अब पूरी तरह से खुली हुई नज़र आ रही थी और उसकी चूत का छेद साफ़ साफ़ दिखने लगा था जो कि उत्तेजना वश धड़क सा रहा था।
उसके कोई दो अंगुल नीचे उसकी गांड का छिद्र अपनी विशिष्ट सिलवटें लिए अलग ही छटा बिखेर रहा था।

एक बार मन तो ललचा गया कि पहले गांड में ही पेल दूं लंड को लेकिन मैंने इस तमन्ना को अगले राउंड के लिए सेव कर लिया।
लंड पेलने से पहले मैंने बहूरानी के मम्मों को एक बार और चूसा, गालों को काटा और फिर नीचे उतर कर चूत को अच्छे से चाटा।

'अब आ भी जाओ पापा जी, समा जाओ मुझमें… और मत सताओ मुझे, अब नहीं रहा जाता ले लो मेरी कल की तरह !' अदिति बहुत ही कामुक और अधीर स्वर में बोली।
'ये लो अदिति बेटा !' मैं बोला और लंड को उसकी चूत के मुहाने पर लगा दिया और फिर वहीं घिसने लगा।

'पापा जी, जरा आराम से डालना, बहुत मोटा है आपका ! दया करना अपनी बहू पे !'
अदिति ने जैसे विनती की मुझसे !
'अदिति बेटा, थोड़ा हिम्मत से काम लेना, अब मोटे को मैं दुबला पतला नहीं कर सकता, जैसा भी है कल की तरह चूत अपने आप संभाल लेगी इसे !'
'जी, पापा जी !'

'और अब इधर देख, मेरी आँख से आँख मिलाती रहना और चुदती रहना !'
'ठीक है अब आ भी जाओ जल्दी !' वो बोली और मेरी आँखों में अपनी आँखें डाल दीं।
मैंने लंड को उसकी चूत के मुहाने पर रखा और प्यार से धकेल दिया उसकी चूत में।

चूत बहुत ही चिकनी और रसीली हो गई थी, इस कारण सुपारा निर्विरोध घुस गया बहूरानी की बुर में ! उसके मुंह पर थोड़ी पीड़ा होने जैसे भाव आये लेकिन वो मेरे आँखों में झांकती रही।

कुछ ही पलों बाद मैं लंड को पीछे खींच कर एक बार में ही पेल दिया उसकी चूत में !
'हाय मम्मी जी… मर गई. कैसे निर्दयी हो पापा जी आप ?' वो बोली और मुझे परे धकेलने

लगी।

मैंने उसके प्रतिरोध की परवाह किये बिना लंड को जरा सा खींच कर फिर से पूरी ताकत से पेल दिया उसकी चूत में!
इस बार मेरी नुकीली झांटें चुभ गईं उसकी चूत में और वो फड़फड़ा उठी।

फिर दोनों दूध कस के दबोच के उसका निचला होंठ चूसने लगा, फिर अपनी जीभ उसके मुंह में घुसा दी। बहूरानी मेरी जीभ चूसने लगी और मैं उसके निप्पल चुटकी में भर के नीम्बू की तरह निचोड़ने लगा।

ऐसे करने से उसकी चुदास और प्रचण्ड हो गई और वो अपनी कमर हिलाने लगी।

फिर मैंने उसकी दोनों कलाइयाँ पकड़ कर उसकी ताबड़तोड़ मस्त चुदाई शुरू कर दी और अपनी झांटों से चूत में रगड़ा मारते हुए उसे चोदने लगा।
बहूरानी के मुंह से कामुक किलकारियाँ निकलने लगीं और वो नीचे से अपनी चूत उठा उठा के मुझे देने लगी।

बस फिर क्या था, कोठरी में उसकी चूत से निकलती फच फच की आवाज और उसकी कामुक कराहें गूंजने लगीं।
‘अच्छे से कुचल डालो इस चूत को पापा जी! बहुत सताती है ये मुझे! आज सुबह से ही जोर की खुजली उठ रही है इसमें उम्म्ह… अहह… हय… याह…’

‘अदिति मेरी जान… ये लो फिर!’ मैंने कहा और उसकी चूत कुचलने लगा जैसे मूसल से ओखली में कूटते हैं, और आड़े, तिरछे, सीधे शॉट मारने लगा।

‘हाँ, पापा राजा… बस ऐसे ही चोदते रहो अपनी बहू को… हाँ आ… याआअ… फाड़ डालो इसे पापा!’

इसी तरह की चुदाई कोई दस बारह मिनट ही चली होगी कि मैं झड़ने पे आ गया।

‘अदिति बेटा, अब मेरा निकलने वाला है, कहाँ लोगी इसे !’
‘मैं तो एक बार झड़ भी चुकी हूँ पापा, अब फिर से झड़ने वाली हूँ… आप मेरी चूत में ही झड़ जाओ, बो दो अपना बीज अपनी बहू की बुर में !’ वो मस्ता के बोली।

लगभग आधे मिनट बाद ही बहूरानी ने मुझे कस के भींच लिया और और कल की ही तरह अपनी टाँगें मेरी कमर में लपेट के कस दीं और मुझे प्यार से बार बार चूमने लगी।

मेरे लंड से भी रस की बरसात होने लगी और उसकी चूत में convulsions होने लगे मतलब मरोड़ उठने लगे, चूत की मांसपेशियां लंड को जकड़ने छोड़ने लगीं जिससे मेरे वीर्य की एक एक बूँद उसकी चूत में निचुड़ गई।

अदिति इस तरह मुझे काफी देर तक बांधे रही अपने से ! जब वो बिलकुल नार्मल हो गई तब जाकर उसने मुझे रिलीज किया। मेरा लंड भी सिकुड़ कर बाहर निकल गया।
फिर उसने चूत से बह रहे मेरे वीर्य और चूतरस के मिश्रण को नैपकिन से पौंछ डाला और मेरा लंड भी अच्छे से साफ़ करके सुपारा फोरस्किन से ढक दिया।

चुदाई के बाद बहुत देर तक हम दोनों बाहों में बाहें डाले चिपके लेटे रहे। बहू रानी के नंगे गर्म जिस्म का स्पर्श कितना सुखद लग रहा था उसे शब्दों में बताना मेरे लिए संभव नहीं है।

‘पापा जी, कर ली न आपने अपने मन की ? अब बत्ती बुझा दो और सो जाओ आप भी !’ बहूरानी उनींदी सी बोली।

कृपया अपने अपने विचार, कमेंट्स कहानी के नीचे लिखें और मुझे भी नीचे लिखे पते पर ई मेल करें।

कहानी जारी रहेगी।

sukant7up@gmail.com

Other stories you may be interested in

बॉस की वाइफ की कामवासना सन्तुष्टि

मेरे प्यारे दोस्तो, मैं नवीन दिल्ली से आपके लिये पहली बार कोई कहानी लिख रहा हूँ. मैं अन्तर्वासना का बहुत बड़ा फैन हूँ.. और रोज़ इसमें आयी हुई कहानियां पढ़ता हूँ. अगर मेरी इस पहली कहानी में कोई त्रुटि या […]
Full Story >>>

कामवासना पीड़िता के जीवन में बहार-3

इस कहानी का पिछला भाग : कामवासना पीड़िता के जीवन में बहार-2 कितनी देर हम एक दूसरे को चूसते रहे, एक दूसरे के जिस्म को सहलाते रहे। अब जब इस मुकाम पर हम पहुँच गए थे तो पीछे जाने का तो […]
Full Story >>>

पड़ोसन भाभी को चुदाई के लिए बोला तो …

दोस्तो, मेरा नाम विराज है. मैं अभी 25 साल का हूँ. आज मैं आपको अपनी एक सच्ची कहानी बताने जा रहा हूँ. यह बात आज से एक साल पहले की है और एकदम सही घटना मेरे और मेरे पड़ोस में […]
Full Story >>>

मेरी प्रेयसी और मैं: दो बदन एक जान-2

कहानी का पिछला भाग : मेरी प्रेयसी और मैं: दो बदन एक जान-1 “अच्छा … तो अब आपके ईमान मुझे ठीक नहीं लग रहे ! मेरी साड़ी आपने उतार ही दी है और मेरी चूत को भी ना के बराबर के कपड़ों […]
Full Story >>>

कम्प्यूटर सीखने के बहाने सेक्स का खेल-2

अब तक इस सेक्स स्टोरी के पहले भाग कम्प्यूटर सीखने के बहाने सेक्स का खेल-1 में आपने जाना कि सोनल ने मुझे अपने हुस्न के हर तरह के जलवे दिखा कर फंसाने की कोशिश की … लेकिन मैंने उसके साथ […]
Full Story >>>